## डॉ. रमेश टण्डन



छत्तीसगढ़ के जिला-रायगढ़, ग्राम- फूलबंधिया में स्थित एक निम्न वर्गीय किसान परिवार में पिता श्री कौशलप्रसाद टण्डन व माता श्रीमती फूलकुँवर टण्डन की कुटिया में एक बालक ने आपातकाल के वक्त ( 1975 ई. ) अंग्रेजी पांचांग के अनुसार नव वर्ष के तृतीय दिवस ( 03 जनवरी ) को अपने जीवन का आरम्भ करते हुए; चिमनी ( ढिबरी ) की रोशनी में, चारपाई में बैठकर अध्ययन संबंधी गृहकार्य एवं प्राथमिक विद्यालयीन अध्ययन को पूरा किया; माध्यमिक, उच्च माध्यमिक की पढ़ाई, बिना चप्पल के चार किलोमीटर की दूरी को पैदल तय करके ग्राम सोण्डका में प्रथम श्रेणी में पूरी की; अट्ठारह वर्ष छः महीने मात्र की उम्र से परिवार के भरण-पोषण के लिए नौकरी का आरम्भ करते हुए, इक्कीस वर्ष छः माह की सटीक उम्र की अवस्था में पूर्णिमा उर्फ पुरान से विवाह रचाकर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश, तदुपरान्त पैतृक परिवार के साथ स्वयं के परिवार का लालन-पालन करते हुए स्वाध्यायी छात्र के रूप में स्नातक की उपाधि प्रथम श्रेणी में, स्नातकोत्तर की उपाधि प्रथम श्रेणी में, सेट, पी-एच. डी. की उपाधि हासिल की, वह है- इस पुस्तक के संपादक डॉ. रमेशकुमार टण्डन।

**मौलिक पुस्तकें** - 1. 'पीड़ा' ( काव्य- संग्रह ) सन् 2014 ई. में जयपुर से प्रकाशित।

**संपादित पुस्तकें** - 2. 'आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी-अस्मिता का धरातलीय सच' ( कुल पृष्ठ - 216 ) फरवरी 2020 ई. में रायपुर से प्रकाशित। 3. एम. ए. हिन्दी के लिए 'भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा' ( कुल पृष्ठ - 360 ) मई 2020 में ( लॉक-डाउन की स्थिति में ) रायपुर से प्रकाशित। 4. एम. ए. हिन्दी के लिए 'लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य', संस्करण: सितम्बर 2020।

**शोध-प्रबंध** - 5. 'साठोत्तरी हिन्दी निबन्धों में व्यंग्य: एक अनुशीलन' ( पी-एच.डी. कार्य ) कुल पृष्ठ - 617, 2005 ई.

आपके दर्जनों शोध-पत्र वाराणसी, जयपुर, मेरठ, हरिद्वार, नीमच, भिलाई, बिलासपुर स्थित अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेक शोध-संगोष्ठियों एवं वेबिनार में सहभागिता की है तथा शोध -पत्रों का वाचन किया है। आपकी अभिरूचि का क्षेत्र काव्य-लेखन है। अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में नवाचार में गहरी रूचि है।

सम्प्रति, महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया जिला- रायगढ़ छ.ग. में हिन्दी के सहायक प्राध्यापक हैं और शोध व लेखन कार्य में सक्रिय हैं। मोबाईल क्रमांक 9685671975 है।

ई-मेल पता - rameshktandan@gmail.com





# एम.ए. हिन्दी

## (तृतीय सेमेस्टर-चतुर्थ प्रश्न पत्र)

# भारतीय साहित्य

## डॉ. रमेश टण्डन

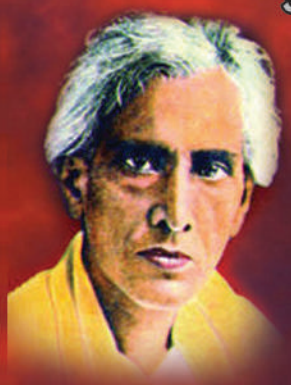



# भारतीय साहित्य

डॉ. रमेश टण्डन

ISBN- 978-93-89989-85-4

●

प्रकाशक

**सर्वप्रिय प्रकाशन**

प्रथम मंजिल, चर्च रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मो. 9 9425358748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

●

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : सितम्बर 2020

मूल्य : 300.00 रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

BHARTIYA SAHITYA

BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by

**Sarvapriya Prakashan**

First Floor, Church Road, Kashmiri Gate, Delhi

First Edition : September 2020

Price : Rs. 300.00

(प्रस्तुत पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में लिखित पाठ्य सामग्री उसके लेखक/संकलनकर्त्ता के द्वारा एम ए हिन्दी में अध्ययनरत छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से संकलित की गई है। अपने पाठ की पूर्णता के लिए इस पुस्तक के अध्याय लेखकों के द्वारा मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए गए हैं, अतः उन मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट के क्रमशः लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा अपलोडर्स का सर्वश्रेष्ठ आभार जिनकी पाठ्य सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। मौलिक तथ्यों/परिभाषा आदि में फेरबदल के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे अपितु अध्याय लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र खरसिया (छ.ग.) होगा।)

## समर्पण



**सावित्री बाई फूले**

**(जन्म : 03 जनवरी 1831, देहावसान : 10 मार्च 1897)**

**देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फूले, जिन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा का द्वार खोलते हुए महिलाओं को भी भारतीय साहित्य के अध्ययन–अध्यापन का अवसर प्रदान किया, को 'भारतीय साहित्य' की यह किताब समर्पित है.**

# अनुक्रम


| क्र. | अध्याय | लेखक | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|---|
| 1. | भारतीय साहित्य का स्वरूप | प्रो. सीमारानी प्रधान | 11 |
| 2. | भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ | डॉ. श्रीमती बी. नंदा जागृत | 21 |
| 3. | भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब | डॉ. रमेशकुमार टण्डन | 31 |
| 4. | भारतीयता का समाजशास्त्र | प्रो. सीमारानी प्रधान | 42 |
| 5. | हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति | डॉ. जयती बिस्वास | 56 |
| 6. | बँगला भाषा के साहित्य का इतिहास | डॉ. दिनेश श्रीवास | 81 |
| 7. | उड़िया भाषा के साहित्य का इतिहास | डॉ. दयानिधि सा | 95 |
| 8. | बँगला भाषा के साहित्य के प्रमुख कृतिकारों का परिचय तथा महत्वपूर्ण कृतियाँ | प्रो. करुणा गायकवाड़ | 110 |
| 9. | उड़िया भाषा के साहित्य के प्रमुख कृतिकारों का परिचय तथा महत्वपूर्ण कृतियाँ | डॉ. दयानिधि सा | 122 |
| 10. | बंगला साहित्य, उड़िया साहित्य और हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन | डॉ. दिनेश श्रीवास | 144 |
| 11. | गिरीश कर्नाड का परिचय एवं हयवदन की कथावस्तु | प्रो. करुणा गायकवाड़ | 161 |
| 12. | हयवदन की समीक्षा | डॉ. देवमाईत मिंज 'देव लकड़ा' | 169 |
| 13. | हयवदन के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण | डॉ. देवमाईत मिंज 'देव लकड़ा' | 173 |


———000———

3.

# भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब

– डॉ. रमेशकुमार टण्डन *

**सेमेस्टर –III, प्रश्नपत्र–IV (भारतीय साहित्य),इकाई – 01**

साहित्य नदी के प्रवाह की तरह होता है, जो निरंतर आगे बढ़ता है। उसमें न कोई रूकावट आती है और न ही कोई उसे भंग करता है। समय के साथ–साथ उसमें परिवर्तन आते रहते हैं और यह परिवर्तन यदि देश–काल–वातावरण को प्रतिबिम्बित करे, तब साहित्य और अधिक उत्कृष्ट हो जाता है। भारतीय साहित्य में भी तत्कालीन भारत के बिम्ब को निम्नानुसार देखा जा सकता है।

## आदि काल

यह हिन्दी साहित्य का सबसे आरम्भिक काल है। उस समय पश्चिमी हिन्दी प्रदेश में अनेक छोटे–छोटे राजपूत राज्य स्थापित हो गये थे, ये परस्पर अथवा विदेशी आक्रमणकारियों से प्रायः युद्धरत रहा करते थे। इन्हीं राजाओं के संरक्षण में रहने वाले चारणों और भाटों का राजप्रशस्तिमूलक काव्य वीरगाथा के नाम से अभिहित किया गया। इसका कार्यकाल सम्वत् 1050 से 1375 तक रहा है।

**सिद्ध नाथ साहित्य :–** बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अनुयायी उस समय सिद्ध कहलाते थे, इनकी संख्या 84 मानी गयी है। ''सरहपा'' प्रथम सिद्ध माने गये हैं। इसके अतिरिक्त शबरपा, लुइपा, डोम्भिपा, कण्हपा, कुक्कुरिपा आदि सिद्ध साहित्य के प्रमुख कवि हैं। इस प्रवृत्ति ने एक प्रकार

---

***जन्म** : 03 जनवरी 1975, ग्राम– फूलबंधिया (रायगढ़), **माता** : श्रीमती फूलकुँवर टण्डन, **पिता** : श्री कौशलप्रसाद टण्डन, पत्नी : श्रीमती पूर्णिमा टण्डन, **योग्यता** : एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी) सेट, पी–एच. डी., **सम्प्रति** : विभागाध्यक्ष / सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया, **मो0 नं0** 9685671975, 7987769144,
**जी मेल** : rameshktandan@gmail.com

की स्वच्छंदता को जन्म दिया, जिसकी प्रतिक्रिया में नाथ संप्रदाय शुरू हुआ। नाथ–साधु, हठयोग पर विशेष बल देते थे, वे योग मार्गी थे तथा निर्गुण निराकार ईश्वर को मानते थे।

**जैन साहित्य** :– जैन कवियों ने जैन धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु जो साहित्य लिखा, वह जैन साहित्य कहलाता है। स्वयंभू, पुष्पदंत, धनपाल आदि उस समय के प्रख्यात कवि हैं।

**चारणी–साहित्य** :– चारणों की भाषा साधारणतः राजस्थानी रही है और भट्टों की ब्रज। इन भाषाओं को डिंगल और पिंगल नाम भी मिले। ये कवि प्रायः राजाओं के दरबार में रहकर उनकी प्रशस्ति किया करते थे, अपने आश्रयदाता राजाओं की अतिरंजित प्रशंसा करते थे, श्रृंगार और वीर रस उनके मुख्य रस थे। इन कवियों में चंदबरदाई–पृथ्वीराज रासो, दलपति–खुमाण रासो, नरपतिनाल्ह–बीसलदेव रासो, जगनिक–आल्हा खण्ड आदि प्रमुख हैं।

### भारत का बिम्ब

**आश्रयदाताओं की प्रशंसा** :– इस काल के कवियों ने अपने–अपने आश्रयदाताओं की बढ़ा–चढ़ाकर प्रशंसा की है। अपने आश्रयदाताओं को ऊँचा दिखाने के लिए विरोधियों को नीचा दिखाना इनका परम धर्म था। इन कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को पराजित, कायर आदि नहीं दिखाया है, स्वर्ण मुद्रा के लोभ में इन कवियों ने राजाओं का झूठा यशगान किया है, परिणामतः इस काल का साहित्य स्तुतिगान हो गया है।

**युद्धों का सजीव चित्रण** :– इन ग्रंथों का मुख्य विषय युद्धों और वीरता का वर्णन है। ये युद्ध वर्णन अत्यंत सजीव है, क्योंकि वे कवि राजाओं के साथ युद्ध भूमि में एक सैनिक की तरह भाग लेने वाले होते थे।

**वीर तथा श्रृंगार रस** :– इन वीर गाथाओं में वीर तथा श्रृंगार रस का अच्छा समन्वय दिखाई पड़ता है। उस समय बाल से लेकर वृद्ध तक में युद्ध का उत्साह था। युद्धों का कारण प्रायः सुंदरियाँ होती थीं, अतः उनका नखशिख वर्णन करके राजाओं के मन में प्रेम जगाया जाता था। इस समय का श्रृंगार वासना से ऊपर नही उठ पाया था।



## भक्ति काल

भक्ति काल इतिहास में वह काल था, जब कवि अपनी कविताओं के माध्यम से भक्ति एवं ईश्वर की उपासना करते थे। भारत में भक्ति आंदोलनों की शुरूआत सातवीं से नौवीं सदी के मध्य हुई, परन्तु यह आंदोलन चौदहवीं शताब्दी में अपनी चरम सीमा पर आ गया और वहाँ से साहित्य का महत्वपूर्ण काल – भक्ति काल आरंभ हुआ। भक्ति काल के दौरान तमाम पूजा–पाठ के आडंबरों को पूर्ण रूप से आलोचना की गयी और मुक्ति प्राप्ति के लिए भक्ति मार्ग को चुनने का समर्थन किया गया। भक्तिकाल में अधिकांश रचनाओं की मुख्य प्रवृत्ति भक्ति थी। आदि काल की वीरता और श्रृंगार से एकदम अलग इस काल के साहित्य में शांत निर्झरिणी बहती है। इस काल में कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से देशभक्ति की लहरों को जगाते हुए मानवतावाद का दिव्य संदेश दिया है।

### भारत का बिम्ब

**भारतीय संस्कृति का चित्रण** :– इस काल की रचनाओं में भारतीय संस्कृति के धर्म, दर्शन, आध्यात्म को विशेष बल दिया है।

**जाति–पांति, छुआ–छूत का विरोध** :– भक्ति कालीन काव्य धारा में जाति–पांति, छुआ–छूत/अस्पृश्यता की भावना का विरोध किया गया है। कबीर ने कहा है– "जाति न पूछौ साधु का पूछ लीजिए ज्ञान"।

**बाह्य आडंबरों का विरोध** :– इस काल के कवियों ने धर्म के नाम पर किए जाने वाले पूजा–पाठ, व्रत, उपवास, कर्मकांड इत्यादि का विरोध किया है। इसमें माला फेरना, सिर मुंडाना, तीर्थयात्रा करना, रोजा रखना, अजान देना आदि का विरोध किया गया है।

**लोक कल्याण की भावना** :– भक्ति काल की रचनाओं में लोक कल्याण, समाज सुधार की भावना के प्रति विशेष आग्रह दिखाई पड़ता है।

भारतीय इतिहास का मध्य काल कई अर्थों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का काल रहा है। यह परिवर्तन न केवल राजनीति बल्कि समाज, संस्कृति, कला और साहित्य आदि के क्षेत्र में भी प्रभावकारी रहा। इस काल को युग परिवर्तक कहा गया। मध्य काल का यह आंदोलन अपने मूल रूप में एक धार्मिक – सांस्कृतिक आंदोलन है।

## रीति काल

दरबारी कवि अपने आश्रयदाताओं की रूचि के अनुसार उनकी विलासिता को उभारने के लिए श्रृंगारिक रचनाएँ करने लगे और नायिकाओं के विविध भेद–प्रभेद, लक्षणों का चित्रण ही इनका मूल उद्देश्य रह गया। डॉ. भागीरथी के शब्दों में– इस धारा के कवियों ने जीवन के लिए अदम्य वासना जागृत कर दी है, सौंदर्यानुभूति और सुरूचि की सुकुमार कसौटी प्रदान की है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार– वासना का सागर ऐसे प्रबल वेग से उमड़ रहा था कि शुद्धिवाद सम्राट के सभी निषेध प्रयत्न बह गए।

### भारत का बिम्ब

**राजप्रशस्ति** :– रीतिकाल के अधिकांश कवि दरबारी कवि थे और राजाओं के आश्रय में रहते थे, इसलिए इन आश्रय दाताओं का गुणगान करना इनकी मजबूरी थी। भूषण जैसे कुछ कवि अपवाद भी हैं।

**नारी के प्रति कामुक दृष्टिकोण** :– रीति कालीन कवियों में नारी का नखशिख वर्णन व्यापक पैमाने पर हुआ है। नारी के बाह्य रूप, स्थूल एवं मांसल चित्रण में उनकी वृत्ति अधिक रही। वह समय ही ऐसा समय था कि नारी को भोग विलास की वस्तु माना जाता था, कामुक दृष्टिकोण से देखा जाता था।

रीतिकाल समृद्धि और विलासिता का काल है। सजीव–श्रृंगार की एक अदम्य लिप्सा इस युग के साहित्य में प्रतिबिम्बित है। इस समय के शासक साहित्य प्रेम, काव्य प्रेम तथा मनोरंजन के लिए कवियों को आश्रय देते थे। कवियों का मुख्य ध्येय आश्रयदाताओं का मनोरंजन हो गया था, क्योंकि कवि अपनी सुख–सुविधाओं के लिए अपनी कला को राजदरबारों में गिरवी रख चुके थे। इस काल के कवियों में परहित का अभाव था।

## आधुनिक काल

आधुनिकता एक नवीन प्रवृत्ति है, जो निरंतरता का बोध कराती है। जो नया है वह नयी पीढ़ी के लिए आधुनिक हो जाता है। आधुनिक काल वस्तुतः आधुनिक इसलिए है कि भारत में ब्रिटिशों की नयी शासन पद्धति आयी और ब्रिटिशों के द्वारा नये साधनों, संस्थाओं का विकास हुआ। इन नये साधनों में डाक, रेल आदि हैं तो संसाधनों में स्कूल, कालेज आदि। परिणामतः देश में जागरण का दौर आया, साथ–ही–साथ साहित्य में भी। कविता



राजदरबार की कामिनी से निकलकर जनता के सुख–दुख से जुड़ी और साहित्य के केन्द्र में सामान्य मनुष्य आए। राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता की भावना, सामाजिकता का महत्व आदि के रूप में देश में नूतन वैचारिक जागृति का युग आया, जिसका प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा।

### भारतेंदु युग में भारत का बिम्ब

भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिन्दी–साहित्य के आधुनिक युग का प्रतिनिधि मानकर आधुनिक हिन्दी–साहित्य का प्रवेश द्वार माना गया है। इस युग में हिन्दी कविता को रीतिकाल के श्रृंगारपूर्ण और राज आश्रय के वातावरण से निकालकर राष्ट्र प्रेम, समाज सुधार आदि की स्वस्थ भावनाओं से ओतप्रोत कर उसे सामान्य जन से जोड़ दिया गया।

**राष्ट्रीयता की भावना** :– इस युग के कवियों ने देशप्रेम की रचनाओं के माध्यम से जनमानस में राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण किया।

**सामाजिक चेतना का विकास** :– भारतेन्दु युगीन काव्य सामाजिक चेतना का काव्य है। भारतेन्दु युग में नारी शिक्षा पर बल दिया गया तथा विधवाओं की दुर्दशा तथा छुआछूत की भावना को दूर करने हेतु सामाजिक चेतना का विकास किया गया। भारतेन्दु युगीन कवियों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास एवं सामाजिक रूढ़ियों को दूर करने हेतु कविताएँ लिखीं।

**हास्य व्यंग्य** :– भारतेन्दु युगीन कविताओं में हास्य व्यंग्यपूर्ण रचनाओं का विशेष रूप मिलता है। हास्य व्यंग्य की इस शैली के माध्यम से, पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन, सामाजिक अंधविश्वासों पर करारे व्यंग्य किए गए हैं।

### द्विवेदी युग में भारत का बिम्ब

आधुनिक कविता के क्षेत्र में द्विवेदी युग को "जागरण काल या सुधार काल" के नाम से जाना जाता है।

**देश–भक्ति** :– देश–भक्ति की भावना द्विवेदी युगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। भारतेन्दु युग में तो देश–भक्ति सीमित थी, किन्तु द्विवेदी युग में देश–भक्ति को व्यापक आधार मिला। इस काल में देश–भक्ति विषयक लघु एवं दीर्घ कविताएँ लिखी गयीं।

**अंधविश्वासों, रूढ़ियों का विरोध** :– इस युग में अंधविश्वासों और रूढ़ियों पर तीखे प्रहार किये गये हैं।

**अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार** :– द्विवेदी युगीन कविता में विदेशी भाषा, अंग्रेजी में दी जा रही थी, जिसके प्रति बहिष्कार का स्वर मिलता है।

द्विवेदी युगीन कविता सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की कविता रही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि द्विवेदी युग राष्ट्र प्रेम, अतीत के गौरव गान, सामाजिक चेतना के विकास के साथ–साथ बोली को शुद्ध रूप देने जैसी विशेषताओं से युक्त आधुनिक युग का महत्वपूर्ण काल है। डॉ. नगेन्द्र ने कहा है– ''इस युग की राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिकता और प्रान्तीयता से ऊपर अति उदार और व्यापक राष्ट्रीयता है। मातृभूमि के लिए सर्वस्व बलिदान, स्वार्थ, त्याग तथा पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने की अमोघ प्रेरणा देकर इन कवियों ने असंकीर्ण राष्ट्रीय भावना को विकसित किया तथा तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन को बल दिया।''

## छायावाद में भारत का बिम्ब

**देश–प्रेम की भावना** :– छायावादी युग में कवियों ने अपने देश भारत के प्रति प्रेम की भावना की अभिव्यक्ति की है। देश की स्वतंत्रता के साथ–साथ उसके अतीत गौरव का गान भी छायावादी कवियों ने किया है।

वस्तुतः यह स्वच्छंदवादी कविता है, जिसकी अभिव्यक्ति का नाम हिन्दी साहित्य में छायावाद हुआ। छायावादी साहित्य कला एवं भाव के क्षेत्र में उभरकर आया हुआ महत्वपूर्ण एवं महान आंदोलन है, जिसके अन्तर्गत नवीन शिक्षा पद्धति, बांग्ला साहित्य का संपर्क, भारत में साम्राज्यवादियों की ओर से देश शोषण के लिए लाया गया यंत्रयुग का विरोध, विदेशी सत्ता के प्रति विद्रोह, द्विवेदी युगीन नैतिकता, आदर्शवाद आदि से संबंधित रचनाएँ लिखी गयीं।

## प्रगतिवाद में भारत का बिम्ब

सन् 1936 से 1945 के महज दस वर्षों में प्रगतिवाद ने हिन्दी क्षेत्र को बड़ा समृद्ध किया है। हिन्दी साहित्य में पहली बार विस्तार से दलित, मजदूर और नारी का नया स्वतंत्र व्यक्तित्व; जीवन की सारी कुरूपताओं, वीभत्सता और करूणा के स्वर के साथ कविता में उभरकर सामने आया। सामाजिक चेतना से युक्त, एक आंदोलन के रूप में 1936 में जिस काव्यधारा का छायावाद की कोख से जन्म हुआ, उसे प्रगतिवाद या प्रगतिशील आंदोलन कहते हैं। यह आधुनिक किसी साहित्य में यथार्थवाद को लेकर आया।



सामाजिक स्थितियों पर प्रहार करते हुए साहित्य का संबंध जीवन निर्माण से इसी समय जोड़ा गया।

पंत जी ने कहा है– प्रगतिवाद वर्ग वैषम्य को दूर कर श्रमिकों तथा कृषकों की मंगल भावना से प्रेरित है। उसमें पूँजीपतियों तथा शोषकों के विरूद्ध क्रांति का आह्वान करने वाला विद्रोह का स्वर है।

**शोषकों के प्रति विद्रोह और शोषितों के प्रति सहानुभूति** :– प्रगतिवादी कवियों ने किसानों, मजदूरों पर किए जाने वाले पूँजीपतियों के अत्याचारों के प्रति अपना विद्रोह व्यक्त किया है। उनका कहना है कि पूँजीवादी सभ्यता मानवतावादी भावना के खिलाफ है।

**आर्थिक एवं सामाजिक समानता पर बल** :– प्रगतिवादी कवियों ने आर्थिक एवं सामाजिक समानता पर बल देते हुए निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के अंतर को समाप्त करने पर बल दिया है।

**क्रांति का स्वर** :– प्रगतिवादी कवियों ने हर वर्ग के प्रति किए जाने वाले शोषण के विरूद्ध क्रांति का स्वर बुलंद किया है।

**समाज के निम्न वर्ग के प्रति करूणा का स्वर** :– प्रगतिशील कवियों ने समाज के निम्न वर्ग, भिक्षुक, मजदूर इत्यादि के प्रति अपना करूणा भाव व्यक्त किया है।

**नारी शोषण के विरूद्ध मुक्ति का स्वर** :– प्रगतिवादी कवियों ने नारी को भोग्या या उपभोग की वस्तु नहीं समझा वरन् उसे देवी, माँ, सहचरी, सखि कहकर सम्मानजनक स्थान दिया है।

**सामाजिक यथार्थ का चित्रण** :– प्रगतिवादी कवियों ने छायावाद की तरह व्यक्तिगत सुख–दुख के भावों को महत्व नहीं दिया, अपितु समाज की गरीबी, भूखमरी, अकाल की विभीषिका, बेरोजगारी आदि सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है।

## नई कविता में भारत का बिम्ब

नई कविता हृदय को तरंगित नही करती, मन को झकझोर देती है। आजादी के बाद मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग में आया स्खलन कई समस्याओं को जन्म दे चुका था। महंगाई, रिश्वतखोर, भ्रष्टाचार, बेईमानी, कालाबाजारी, जातियता, साम्प्रदायिकता, धर्मांधता, यंत्रयुग के कारण बढ़ती बेरोजगारी,

यौन जीवन में आया खुलापन, टुटते पारिवारिक संबंध, व्यक्ति मन में बढ़ता तनाव आदि ने यथार्थ के क्षण की महत्ता को रेखांकित किया। इस समय लघुमानव के बहाने उसकी प्रतिष्ठा और महत्ता को पुनः स्थापित करना जरूरी लगा। कलाकारों, कवियों की नैतिक जिम्मेदारी ने उनमें बेचैनी, छटपटाहट, नैराश्य और तनाव को देखा और इन सब के विरूद्ध, प्रतिबद्ध संघर्ष की अभिव्यक्ति नई कविता में हुई।

## नवगीत में भारत का बिम्ब

नवगीत का आधुनिक विकास तीन कालखंडों में विभाजित कर देखा जा सकता है–

1. प्रथम स्तर – 1950 से 1960 तक,
2. द्वितीय स्तर – 1960 से 1970 तक,
3. तृतीय स्तर – 1970 से अब तक।

प्रथम स्तर स्वतंत्र भारत में नवरोमानियतता से भरा आशावादी और यथार्थोन्मुखता का रहा है। नेहरू की विकास संभावनाओं से प्रभावित नये लेखकों की पीढ़ी का यह दौर सामाजिक रूढ़ियों, परम्पराओं के प्रति आक्रोश, विद्रोह से भरा रहा है। परिणामतः आधुनिकता का नवरोमानियतता का प्रभाव इस कालखंड में लिखे गए नवगीतों में दिखाई देता है।

द्वितीय स्तर बदलते नगर बोध की चेतना से भरा है, जिसमें जीवन में आयी यांत्रिकता, अजनबीपन, विसंगतियाँ, संत्रास, कुंठा के साथ सहज ग्राम्य बोध पाया जाता है। अतित्ववाद के प्रभाव का दौर नवगीतों पर भी रहा है।

तृतीय स्तर जीवन यथार्थता, जीवन में बढ़ती सामाजिक–राजनीतिक, अक्रांतता, लोकतंत्र का खोखलापन, परिवर्तन के प्रति निराशा के साथ आपातकाल के आतंक से प्रभावित रहा है।

## निष्कर्ष–

निष्कर्षतः स्वतंत्रता के पूर्व भारतेंदु युग में पुनर्जागरण की अवस्था आई। इसके कारण भारतीय साहित्य में (1) भारतीय गौरव का पुनर्जीवन, (2) सामाजिक सुधार, (3) हिन्दू धर्म का पुनर्जीवन, (4) प्राचीन इतिहास एवं



साहित्य का पुनर्जीवन, (5) प्रांतीय भाषाओं का विकास, (6) पत्र–पत्रिकाओं का प्रचार एवं (7) ललित कलाओं का विकास हुआ।

राष्ट्रीय आंदोलन के कारण राष्ट्रीय चेतना जागृत हुई। राष्ट्रीयता का प्रारम्भिक स्वरूप सिकन्दर आदि के आक्रमण काल से मान सकते हैं। जयशंकर प्रसाद ने चंद्रगुप्त नाटक में इस भावना को जागृत किया। इस नाटक में अलका जन समुदाय को एकत्र करती है, चन्द्रगुप्त सिकन्दर को पीछे हटाता है, सेल्यूकस को परास्त कर उसकी पुत्री से विवाह करता है; इसमें चाणक्य के राजनीतिक कूटनीतिज्ञ एवं अर्थशास्त्री के साथ महान देशभक्त होने का पता चलता है।

औरंगजेब के शासन का विरोध करते हुए महाकवि भूषण ने 'शिवा बावनी' की रचना की और "सराहो शिवा को सराहो छत्रसाल को" कहकर राष्ट्रीयता का परिचय दिया।

भारतेंदु ने 'भारत दूर्दशा' नाटक में भारत की दशा का वर्णन किया तथा 'अंधेर नगरी, चौपट राजा' में राजाओं की मूर्खता का वर्णन किया। बंगाल में बंकिम चन्द्र चटर्जी ने आनंदमठ में 'वन्दे मातरम्' की रचना कर एक नयी हलचल उत्पन्न कर दी। भारत माता की वन्दना भी की गई– "वन्दे जननी भारत धरी, शश्य श्यामला प्यारी"। रवीन्द्रनाथ टैगोर का "जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता" राष्ट्रगान बन गया। बहादुर शाह जफर की कविता "तख्तो लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की" सशक्त रचना है। इकबाल की रचना "सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा" प्रतिनिधि रचना है। गांधी साहित्य, विनोबा साहित्य, रवीन्द्र साहित्य की रचनाएँ हुईं।

मैथिली शरण गुप्त ने 'भारत–भारती' में देश में हलचल मचा दी–

"हम क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।।"

समाज सुधार, छुआछूत का विरोध, विधवा की दशा आदि पर सुमित्रानन्दन पंत, जयशंकर प्रसाद एवं सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने बहुत कुछ लिखा। निराला ने 'भारत–माता', 'ग्राम वासिनी', 'जागो फिर एक बार' लिखकर जागृति उत्पन्न की। 'तोड़ती पत्थर' में तत्कालीन निम्नवर्गीय परिवार की महिलाओं का वर्णन निराला ने बखूबी किया है। पाठक जी की

रचना 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' ने देश भर में हलचल मचा दी। रामधारी सिंह दिनकर ने 'तुकार' एवं 'गुंजन' में राष्ट्रीयता का समावेश किया, 'रेणुका' में अतीत गौरव का चित्रण किया तथा 'कुरूक्षेत्र' में उन्होंने राष्ट्रीय भावना की ओर संकेत किया है। सुभद्राकुमारी चौहान की रचना 'झांसी की रानी' महान सिद्ध हुई–

"बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।"

अंग्रेजों की कूटनीति के परिणाम पर भी यह पंक्ति द्रष्टव्य है–

"रानी दासी बनी और दासी अब महारानी थी।"

माखनलाल चतुर्वेदी की 'युग चरण', 'समर्पण', 'माता', 'वेणुला गुँजे धरा' में राष्ट्रीय कविताएँ संग्रहित हैं; 'कैदी', 'कौकिला' में उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य पर करारी फटकार दी है; 'वलिपंथी', 'युग वरूण', 'सेनानी' में तरूणों को ललकारा है; 'पुष्प की अभिलाषा' में राष्ट्रीयता बिखेरी है। श्रीकृष्ण सरल ने भगतसिंह एवं चन्द्रशेखर आजाद के लिए महाकाव्य लिख डाला। सोहनलाल द्विवेदी की 'भैरवी', 'वासवदत्ता', 'पूजागीत', 'जयगांधी' में राष्ट्रीयता परिलक्षित होती है। बालकृष्ण शर्मा नवीन की हुँकार जग प्रसिद्ध है–

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाए।"

वीरेन्द्र मिश्र ने "मेरा देश है इस पर नाज मुझको" में भारत की महिमा का वर्णन किया है। त्रिलोचन की कविता में अपनी धरती, भाषा और प्रकृति के प्रति अत्यन्त सम्मान व गहरे लगाव का भाव दिखाई देता है–

"हम भारत के हैं, भारत है देश हमारा।
भारत का सम्मान, हमारी जीवन भाषा।।"

धूमिल, हरिनारायण व्यास, अज्ञेय, यशपाल, भवानी प्रसाद मिश्र आदि कवियों ने राष्ट्रीयता की कविताएँ दी हैं। गद्यकारों एवं नाटककारों में वृन्दावनलाल वर्मा, मुंशी प्रेमचंद, हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविन्द दास आदि अनेक लेखकों ने तत्कालीन भारत को साहित्य में प्रतिबिम्बित किया है।

स्वतंत्रता के पश्चात्, विभाजन के प्रभाव के कारण देश की दशा का वर्णन भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास में किया। कवियों में डॉ0 शिवमंगल सिंह सुमन, भवानी प्रसाद मिश्र, दुष्यंत कुमार, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन,



लीलाधर जगूड़ी, हरिवंशराय बच्चन, डॉ0 दशरथ ओझा आदि ने आज के भारत का बिम्ब अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। श्रीलाल शुक्ल ने 'राग दरबारी' में, फणीश्वर नाथ रेणु ने 'मैला आंचल' में आधुनिक भारत की झलक प्रस्तुत की है। डॉ0 रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, विष्णु प्रभाकर, जैनेन्द्र कुमार, निर्मल वर्मा, जगदीश माथुर, उपेन्द्रनाथ अश्क, मन्नू भण्डारी, मोहन राकेश आदि ने भी अपने साहित्य में भारत दर्शन कराया है। पत्र–पत्रिकाओं, दूरदर्शन, रेडियो, वेबसाईट, इंटरनेट, सिनेमा की कहानी आदि ने सभी भाषाओं के माध्यम से आज के भारत को प्रतिबिम्बित किया है एवं निरंतर कर रहे हैं। हिन्दी–साहित्य के साथ–साथ भारत की अन्य भाषाओं जैसे – उड़िया, बंगला, असमिया, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम आदि में रचित साहित्य में भी तत्कालीन परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब दिखायी देता है । समान सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक भूमि से उत्पन्न होने के कारण तमिल का संगम साहित्य, तेलगू का अवधान साहित्य, गुजराती का आख्यान एवं हिन्दी का चारण काव्य लगभग एक जैसी प्रवृत्तियों को धारण किए हुए हैं ।

हिन्दी के प्रसिद्ध संत कबीर ने जिस प्रकार प्रहरी की तरह समाज को दिशा दी, उसी प्रकार मराठी संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव ने तथा पंजाबी संत गुरुनानक ने समाज को दिशा दी । तेलगू में वीरेशलिंगम, उड़िया में फकीर मोहन सेनापति, बंगला में रविन्द्रनाथ टैगोर तथा कन्नड़ में गिरीश कर्नाड सहित अनेक साहित्यकारों ने तत्कालीन समाज को अपने साहित्य में चित्रित किया है ।

■■

**"मुझे पैतृक–भाषा बोलने में कभी–भी संकोच नहीं होगा, मैं विदेश में भी अपने लोगों के बीच इस भाषा का प्रयोग करके गर्व महसूस करूँगा।" (छत्तीसगढ़ी भाषा के संदर्भ में)**

**– डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया**